अंक-14, 2017

मानव अधिकार : नई दिशाएं

राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग, भारत

दो शब्द
न्यायमूर्ति श्री एच. एल. दत्तू
अध्यक्ष, राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग

आमुख
श्री शरद चन्द्र सिन्हा, सदस्य, राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग

प्रस्तावना
श्री अम्बुज शर्मा, महासचिव, राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग

सम्पादकीय
डॉ. रणजीत सिंह, संयुक्त सचिव, राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग

आलेख

- जनतांत्रिक पुलिस व्यवस्था और मानवाधिकार -शैलेन्द्र कुमार अग्निहोत्री
- लोकतंत्र, पुलिस और मानव अधिकार - गीता साताप्पा देवेकर
- लोकतांत्रिक मूल्यों के आइने में भारतीय पुलिस -छाया शर्मा
- संवेदनशील, जवाबदेह एवं नागरिकोन्मुखी पुलिस -जालम सिंह
- पाक-विस्थापितों के मानवाधिकार -नेमीचन्द
- विकास और विस्थापन की प्रक्रिया - ममता कुमारी
- भारतीय किसानों के समक्ष चुनौतियां -शीलेन्द्र कुमार
- किसान आत्महत्या और सामाजिक परिप्रेक्ष्य - शंभू जोशी
- आदिवासी किसान : भुखमरी बनाम आत्महत्या - शमीम मोदी
- किसान आत्महत्या : मानवाधिकार को चुनौती -सुदर्शन वर्मा एवं नितेश कुमार चतुर्वेदी
- किसानों की आत्महत्या : एक विश्लेषण - एस.एम. झरवाल
- जीवन अस्तित्व और कृषक आत्महत्या -अमित कुमार विश्वास
- राजनीति के शिकार भारतीय किसान - दिनकर कुमार
- किसानों की आत्महत्या तथा जीने का अधिकार -विवेक किशोर
- असंगठित क्षेत्र में कार्यरत महिलाओं के अधिकार -राकेश कुमार सिंह
- असंगठित क्षेत्र, कामगार तथा उनके अधिकार -पंकज कुमार
- महिला कामगार और मानव अधिकार -आकांक्षा
- महिला सशक्तीकरण और शिक्षा -संजुला थानवी
- स्त्री शिक्षा की चुनौतियां -अनुराग मोदी
- आधी आबादी की शिक्षा एवं चुनौतियां -ज्ञानवती धाकड
- स्त्री-शिक्षा, मुक्ति और मानवाधिकार -सरोज कुमार वर्मा
- लोक कल्याण एवं मानव अधिकार -पुनीत कुमार, मंजुलता गर्ग
- भारतीय संविधान, मानव अधिकार एवं लोक कल्याण -कंचन माला
- नागर समाज की संकल्पना तथा कार्यक्षेत्र -डिम्पल कुमारी
- शिक्षा का अधिकार : एक अध्ययन -जोस कलापुरा एवं आशुतोष कुमार विशाल
- मानवीय अधिकारों का नया पहरुआ : सोशल मीडिया -प्रतिभा
- घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण -लालाराम जाट एवं अनिला
- भारतीय चिकित्सा व्यवस्था : एक विश्लेषण -रजनी गोसांई
- प्रत्यक्ष नकद हस्तांतरण और कृषक -अश्विनी कुमार
- गोरखपुर के बहाने -सरोज जेठू

कहानी

- दबी-दबी लहरें -मधु कांकरिया
- मृगतृष्णा -रीतामणि वैश्य

कविता

- बंत सिंह -कर्मानन्द आर्य
- अध्यारोहण है यह -प्रांजल धर
- लालसा -मनोज कुमार झा
- एक सभ्यता ये भी -उपांशु
- कचोटता है कुछ -अंचित
- निर्वासन (अनूदित कविता) -अंचित
- सड़क के भिखारी और भद्र लोग -अनन्त मिश्र
- दाना मांझी -विश्वनाथप्रसाद तिवारी
- अब ना चुप रह पाऊंगी -लक्ष्मी जायसवाल अग्रवाल

अनूदित खण्ड

- स्वास्थ्य के अधिकार की चुनौतियां: न्यायालयी एवं वैश्विक परिवेश -एलिसिया एली यामीन
- बहुसंस्कृतिवाद और महिलाओं के अधिकार -रुचिरा गोस्वामी

साक्षात्कार

- राष्ट्र निर्माण हेतु बुनियादी शिक्षा व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन की आवश्यकता -रुकमणि बनर्जी

समीक्षा

- हर आयाम पर पैनी नज़र -आकांक्षा पारे काशिव
- सुशासन की सैद्धान्तिकी -ओम निश्चल

Scanned with CamScanner

- लोक कल्याण एवं मानव अधिकार — 211–224
  पुनीत कुमार, मंजुलता गर्ग
- भारतीय संविधान, मानव अधिकार एवं लोक कल्याण — 225–233
  कंचन माला
- नागर समाज की संकल्पना तथा कार्यक्षेत्र — 235–245
  डिम्पल कुमारी
- शिक्षा का अधिकार : एक अध्ययन — 247–262
  जोस कलापुरा एवं आशुतोष कुमार विशाल
- मानवीय अधिकारों का नया पहरुआ : सोशल मीडिया — 263–267
  प्रतिभा
- घरेलू हिंसा से महिलाओं का संरक्षण — 269–282
  लालाराम जाट एवं अनिला
- भारतीय चिकित्सा व्यवस्था : एक विश्लेषण — 283–290
  रजनी गोसांई
- प्रत्यक्ष नकद हस्तांतरण और कृषक — 291–294
  अश्विनी कुमार
- गोरखपुर के बहाने — 295–303
  सरोज जेठू

कहानी

- दबी–दबी लहरें — 307–315
  मधु कांकरिया
- मृगतृष्णा — 317–327
  रीतामणि वैश्य

कविता

- बंत सिंह — 331–332
  कर्मानन्द आर्य
- अध्यारोहण है यह — 333–335
  प्रांजल धर

Scanned with CamScanner

मानवीय अधिकारों का नया पहरुआ : सोशल मीडिया

प्रतिभा*

संकेतों, वाणी तथा अनेक माध्यमों से अपनी भावनाओं का प्रकटीकरण प्रकृति द्वारा मानव को प्रदत्त सर्वोत्तम उपहार है। क्रमशः चित्र, संगीत, काव्य आदि माध्यमों से मनुष्य की भावनाओं का प्रकटन उदात्त ऊँचाइयों तक पहुँच गया। समय के प्रवाह में रेडियो, टेलीविजन, कम्प्यूटर, इन्टरनेट, टेलीफ़ोन तथा मोबाइल आदि अभिव्यक्ति की इस विकासमान यात्रा के पड़ाव बने।

इसी क्रम में वर्तमान युग की एक क्रांतिकारी खोज है सोशल मीडिया, जिसने वर्तमान पीढी की सोच, वाणी और कार्य पद्धति सभी को बदल कर रख दिया है। क्या है सोशल मीडिया? वस्तुतः सोशल मीडिया पारस्परिक संबंध हेतु इन्टरनेट अथवा अन्य माध्यमों द्वारा निर्मित आभासी समूहों को संदर्भित करता है, यह न केवल व्यक्तियों तथा समूहों के सहभागी बनने के एक माध्यम के रूप में सामाजिक संबंध हेतु उपयोग में आता है, बल्कि डिजिटल संसाधनों को सामाजिक रूप से उपलब्ध कराने हेतु मंच भी मुहैया कराता है।

सोशल मीडिया के कई रूप हैं, जिनमें इन्टरनेट फ़ोरम, वेब लॉग, सामाजिक ब्लॉग, माइक्रोब्लॉगिंग, विकीज, सोशल नेटवर्किंग, पॉड कास्ट फोटोग्राफ, चित्र, चलचित्र आदि सभी आते हैं। इनमें सोशल नेटवर्किंग विश्व में इन्टरनेट पर होने वाली प्रमुखतम गतिविधि है जिसके सशक्त माध्यम से इन्टरनेट सुविधा से जुड़े लोग दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने में बैठे लोगों से संवाद एवं विचार–विमर्श कर सकते हैं। न केवल अपने विचारों को दुनिया के समक्ष रख सकते है बल्कि दूसरों के विचारों और महत्त्वपूर्ण वैश्विक हलचलों से भी अवगत हो सकते हैं।

सोशल मीडिया का जन्म 1995 ई. में हुआ माना जाता है, जब 'क्लासमेट्स डॉट्स कॉम' नामक एक नेटवर्किंग साइट का प्रारम्भ हुआ। अभी भी सक्रिय इस साइट के जरिए स्कूलों, कॉलेजों तथा मिलिट्री आदि के लोग एक दूसरे से जुड़ सकते थे। इसके पश्चात् 1996 में 'बोल्ट डॉट कॉम' अस्तित्व में आया तथा 1997 में एशियाई–अमेरिकी कम्यूनिटी के लिए 'एशियन एवेन्यू' का जन्म हुआ, किंतु इस क्षेत्र में क्रांति का सूत्रपात हुआ फरवरी, 2004 में 'द फेसबुक' के उद्भव के बाद, जिसे मार्क जुकरबर्ग ने बनाया तो था हार्वर्ड विश्वविद्यालय के छात्रों के लिए किन्तु 2005 में यह दूसरे कॉलेजों, विश्वविद्यालयों की सीमाएँ लांघता हुआ 'फेसबुक' के नाम से विश्व में छा गया।

वर्तमान में सक्रिय सैंकड़ों नेटवर्किंग साइट्स में से फेसबुक, व्हाट्सअप, ट्विटर, ऑरकुट, माई स्पेस, पिन्ट्रेस्ट, लिंक्ड इन, फ्लिकर, इंस्टाग्राम सर्वाधिक लोकप्रिय हैं।

* आचार्य एवं विभागाध्यक्ष, इतिहास विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राजस्थान)

Scanned with CamScanner

इनमें भी फेसबुक पर कुल 2 अरब लोग सक्रिय हैं, जिनमें से 24 करोड़ भारतीय हैं। वैश्विक स्तर पर प्रति मिनट फेसबुक पर 5,10,000 कमेन्ट किए जाते हैं, 2,93,000 स्टेट अपडेट होते हैं और 1,36,000 फोटो अपलोड़ किए जाते हैं।

कहा जा सकता है कि आज सोशल मीडिया जीवन–शैली को बदलते हुए हमारी आवश्यकताओं, कार्य–पद्धतियों, रुचियों–अभिरुचियों सभी के सूत्रधार की भूमिका में आ पहुँचा है।

यथा विदित है, सोशल मीडिया की सर्वप्रमुख पहचान एक संवाद मंच के रूप में है, जहाँ एक–दूसरे को बिना देखे, बखूबी परिचित हो चले लोग अपने विचार, सुख–दुख, काम, सपने सभी कुछ साझा करते हैं। यहीं बिना किसी शोर–शराबे और प्रचार के, सोशल मीडिया सामाजिक सम्बन्धों के शिथिल होते ताने–बाने को दुरुस्त करता नजर आता है। इसके माध्यम से न केवल घर बैठे तमाम अनजान लोगों को ही परिचय के दायरे में ले आया जाता है, बल्कि कर्तव्य–निर्वाह के बोझ तले दुनिया की भीड़ में कहीं खो गए स्कूल और मोहल्ले के बचपन के दोस्तों को भी ढूंढ निकाल कर जोड़ लिया जाता है और मजेदार यह तथ्य कि यह जुड़ाव तुरंत व वास्तविक समय में होता है और फिर बातचीत, बार–बार जुड़ाव व समूहीकरण संभव हो पाता है।

इस प्रकार एक ऑनलाइन समुदाय की संकल्पना सच हो चली है, जिसमें लोग रियल टाइम में सारी चीजें 'डाक्यूमेन्ट' भी कर रहे होते हैं और 'शेयर' भी।

अकेलेपन और अवसाद से जूझ रहे लोगों, विशेषकर बुजुर्गो के लिए यह एक वरदान साबित हुआ है, जो घर से दूर रह रहे 'बच्चों को 'रूबरू' देख पा सकने के साथ–साथ ज़रूरत पड़ने पर सहायता भी प्राप्त कर पाते हैं।

सोशल मीडिया के माध्यम से जिस मानवीय अधिकार को सर्वाधिक बल प्राप्त हुआ है, वह है **अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता** का अधिकार। इससे जनसाधारण को अभिव्यक्ति हेतु स्वतंत्र मंच प्राप्त हो गया है, वह भी बिना किसी औपचारिक शिक्षण अथवा डिग्री की आवश्यकता के जिस लेखन कार्य पर पहले गिने–चुने लोगों का वर्चस्व था, अब उससे आम जन भी जुड़ गया है। देखा जाए तो इसमें सक्रिय प्रत्येक व्यक्ति ही स्वतंत्र पत्रकार की भूमिका में है, जहाँ वह स्वयं ही लेखक, सम्पादक, प्रकाशक, विज्ञापनकर्ता और वितरण है। 'मीडिया' शब्द का प्रयोग भी सोशल मीडिया को पत्रकारिता के अंश के रूप में स्वीकार करता है जिसमें पत्र–पत्रिकाओं के कार्यालयों के चक्कर लगाए बिना ही लेख, व्यंग्य, कविता कार्टून लोगों तक पहुँच जाते हैं। प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया भी समय की नब्ज पहचान कर इसे पर्याप्त महत्त्व प्रदान करते हैं और इसके प्रसिद्ध (वायरल) तथ्यों को ख़बर बनाकर अपने पाठकों और दर्शकों तक पहुंचाते हैं।

वाक् और अभिव्यक्ति की यह स्वतंत्रता मात्र अपने विचारों के प्रसार तक ही सीमित नहीं है। लाइकिंग, शेयरिंग, रिट्वीटिंग आदि द्वारा दूसरों के विचारों के प्रचार–प्रसार का कार्य भी बखूबी सोशल मीडिया द्वारा किया जाता है।

Scanned with CamScanner

बेहतरीन सोच और सामाजिक समझ के दायरे को विकसित करके सोशल मीडिया विविध **लोकतांत्रिक अधिकारों** के प्रति दुनिया को जागरूक करने में सफल हुआ है और नव–निर्माण के लिए संघर्ष के माध्यम से आत्मीयता, एकजुटता और व्यापक बदलाव का जरिया सिद्ध हुआ है। एक जैसी मानसिकता के लोग जुड़कर सामाजिक–राजनैतिक सरोकारों को पूरा करने का प्रयत्न करते हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से न केवल दशकों से सशक्त लोकपाल की ख्वाहिश दिल में रखे भारतीयों ने अन्ना हजारे के आन्दोलन और अनशन को समर्थन देकर इसे व्यापक रूप से फ़ैलाने में अपना योगदान दिया, बल्कि उनके अहिंसक संघर्ष को यू–ट्यूब आदि पर देखकर लाखों विदेशियों ने भी इसे समर्थन और सहयोग दिया।

इसी प्रकार 2012 के निर्भया कांड में दोषियों को सजा दिलाने में एकजुट हो उठे लोगों और परिणामतः तीव्र हुई न्यायिक प्रक्रिया का श्रेय सोशल मीडिया को ही है। वैश्विक संदर्भो में भी मिस्र के तहरीर चौक और ट्यूनीशिया की जैस्मीन क्रांति में सोशल मीडिया की भूमिका असंदिग्ध है।

लोकतंत्र को मज़बूत बनाने में सोशल मीडिया की भूमिका महत्पूर्ण सिद्ध हो रही है क्योंकि जनता की आवाज़ शासन तक पहुंचाकर सोशल मीडिया ने उसे समाज और जनहित के मुद्दों पर कार्य करने हेतु त्तपर किया है। नारी सशक्तीकरण, शिक्षा, पर्यावरण, स्वच्छता, भ्रष्टाचार विरोध और अपराध–मुक्ति के विषय में अलख जगाकर न केवल इसने मानवाधिकारों को धार प्रदान किया है बल्कि दलित, आदिवासी और स्त्री–विमर्शी के साहित्यिक रूपों द्वारा मानवाधिकार पर बहस भी तेज़ की है।

सुशासन के लिए भी सोशल मीडिया बेहतर औजार सिद्ध हो रहा है। 'ऑक्सफोर्ड इन्टरनेट इन्स्टीट्यूट के प्रोफेसर विलियम एच. डटन का सोशल मीडिया को 'लोकतंत्र के पांचवें स्तम्भ' के रूप में देखना बिल्कुल सही प्रतीत होता है, जब हम देखते हैं कि भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालय सोशल मीडिया पर सक्रिय रहकर जनता द्वारा रखी गई शिकायतों, समस्याओं और सुझावों पर त्वरित कार्रवाई द्वारा न केवल अपनी कार्य प्रणाली को दुरुस्त कर रहे हैं, बल्कि अपनी छवि को भी बेहतर बना रहे हैं। रेलवे और विदेशी मामलों के मंत्रालय इसके श्रेष्ठ उदाहरण हैं। स्वयं प्रधानमंत्री जनता से संवाद हेतु 'राइट टू पी.एम.' 'माई गाँव' इत्यादि पोर्टल्स पर सक्रिय हैं।

समानता के अधिकार का पोषण भी सोशल मीडिया द्वारा बखूबी हो रहा है, जहां भिन्न–भिन्न धर्म, जाति, लिंग, और भाषा से जुड़े लोग वैचारिक आग्रहों से समान मंच पर आ पा रहे हैं और इस नाते वैयक्तिक सामाजिक सुख–दुःख साझा कर पा रहे हैं।

सोचने–समझने, अपनी क्षमता बढ़ाने, सपने देखने और उन्हें पूरा करने के समान अवसरों द्वारा भी सोशल मीडिया समानता के अधिकार की गरिमामय पूर्ति का अवसर प्रदान करता है।

Scanned with CamScanner

बेहतरीन सोच और सामाजिक समझ के दायरे को विकसित करके सोशल मीडिया विविध **लोकतांत्रिक अधिकारों** के प्रति दुनिया को जागरूक करने में सफल हुआ है और नव–निर्माण के लिए संघर्ष के माध्यम से आत्मीयता, एकजुटता और व्यापक बदलाव का जरिया सिद्ध हुआ है। एक जैसी मानसिकता के लोग जुड़कर सामाजिक–राजनैतिक सरोकारों को पूरा करने का प्रयत्न करते हैं। सोशल मीडिया के माध्यम से न केवल दशकों से सशक्त लोकपाल की ख्वाहिश दिल में रखे भारतीयों ने अन्ना हजारे के आन्दोलन और अनशन को समर्थन देकर इसे व्यापक रूप से फ़ैलाने में अपना योगदान दिया, बल्कि उनके अहिंसक संघर्ष को यू–ट्यूब आदि पर देखकर लाखों विदेशियों ने भी इसे समर्थन और सहयोग दिया।

इसी प्रकार 2012 के निर्भया कांड में दोषियों को सजा दिलाने में एकजुट हो उठे लोगों और परिणामतः तीव्र हुई न्यायिक प्रक्रिया का श्रेय सोशल मीडिया को ही है। वैश्विक संदर्भो में भी मिस्र के तहरीर चौक और ट्यूनीशिया की जैस्मीन क्रांति में सोशल मीडिया की भूमिका असंदिग्ध है।

लोकतंत्र को मज़बूत बनाने में सोशल मीडिया की भूमिका महत्पूर्ण सिद्ध हो रही है क्योंकि जनता की आवाज़ शासन तक पहुंचाकर सोशल मीडिया ने उसे समाज और जनहित के मुद्दों पर कार्य करने हेतु त्तपर किया है। नारी सशक्तीकरण, शिक्षा, पर्यावरण, स्वच्छता, भ्रष्टाचार विरोध और अपराध–मुक्ति के विषय में अलख जगाकर न केवल इसने मानवाधिकारों को धार प्रदान किया है बल्कि दलित, आदिवासी और स्त्री–विमर्शी के साहित्यिक रूपों द्वारा मानवाधिकार पर बहस भी तेज़ की है।

सुशासन के लिए भी सोशल मीडिया बेहतर औजार सिद्ध हो रहा है। 'ऑक्सफोर्ड इन्टरनेट इन्स्टीट्यूट के प्रोफेसर विलियम एच. डटन का सोशल मीडिया को 'लोकतंत्र के पांचवें स्तम्भ' के रूप में देखना बिल्कुल सही प्रतीत होता है, जब हम देखते हैं कि भारत सरकार के विभिन्न मंत्रालय सोशल मीडिया पर सक्रिय रहकर जनता द्वारा रखी गई शिकायतों, समस्याओं और सुझावों पर त्वरित कार्रवाई द्वारा न केवल अपनी कार्य प्रणाली को दुरुस्त कर रहे हैं, बल्कि अपनी छवि को भी बेहतर बना रहे हैं। रेलवे और विदेशी मामलों के मंत्रालय इसके श्रेष्ठ उदाहरण हैं। स्वयं प्रधानमंत्री जनता से संवाद हेतु 'राइट टू पी.एम.' 'माई गाँव' इत्यादि पोर्टल्स पर सक्रिय हैं।

समानता के अधिकार का पोषण भी सोशल मीडिया द्वारा बखूबी हो रहा है, जहां भिन्न–भिन्न धर्म, जाति, लिंग, और भाषा से जुड़े लोग वैचारिक आग्रहों से समान मंच पर आ पा रहे हैं और इस नाते वैयक्तिक सामाजिक सुख–दुःख साझा कर पा रहे हैं।

सोचने–समझने, अपनी क्षमता बढ़ाने, सपने देखने और उन्हें पूरा करने के समान अवसरों द्वारा भी सोशल मीडिया समानता के अधिकार की गरिमामय पूर्ति का अवसर प्रदान करता है।

Scanned with CamScanner

जहाँ तक **आर्थिक अधिकारों** का प्रश्न है, व्यापार हेतु भी सोशल मीडिया का प्रभावी उपयोग हो रहा है क्योंकि यह समग्र विपणन लागत को कम करने में सहायता करता है। संभावित ग्राहकों को भी संगठित कर व्यापार में वृद्धि का प्रयास किया जा सकता है। एक प्रकार से सोशल मीडिया के रूप में प्रचारकों को अपना उत्पादन बेचने की नई जगह प्राप्त हो गई है। फेसबुक पर उपभोक्ताओं का वर्गीकरण भिन्न–भिन्न मानकों पर किया जाता है जिसमें उनकी आय रुचि, लिंग, गतिविधियों आदि के अनुरूप विज्ञापन।

कोई भी तकनीकी विकास अपने साथ जोखिम भी लेकर आता है। सोशल मीडिया भी उसका अपवाद नही है। इस सम्बन्ध में सोशल मीडिया से जुड़े कुछ जोखिम उल्लिखित किए जा सकते हैं।

यथा, सोशल मीडिया का अत्यधिक और अनियन्त्रित उपयोग एक गंभीर लत में परिवर्तित हो जाता है। विशेष रूप से न केवल किशोर और युवा वर्ग का बेशकीमती समय प्रोफाइल चैक करने और अपडेट करने जैसी लत में बर्बाद हो रहा है बल्कि निरन्तर इन गतिविधियों में उनकी लिप्ता मस्तिष्क को शिथिल कर थकान, तनाव, चिडचिडापन, एकाग्रता में कमी, शारीरिक क्षमता में कमी आदि को आमंत्रण देती है। आभासी दुनिया में लीन उनके पारिवारिक–सामाजिक दायरे का दिनों–दिन घटते जाना भी इस चिन्ता को बढ़ाता है।

अनेक बार सोशल मीडिया पर विविध विचारधाराओं के समर्थकों और विरोधियों की खेमेबन्दी हो जाती है और दूसरों की भावनाओं को आहत करने वाले पोस्ट आपसी द्व ष, उत्तेजना और असहिष्णुता बढ़ाते हुए विभिन्न समूहों में तनाव का कारण बन जाते हैं। बिना सोचे–समझे किए जाने वाले पोस्ट भी अनेकशः कटुता बढ़ा देते हैं।

सोशल मीडिया साइट पर पारिवारिक–व्यावसायिक जानकारियां अपडेट करते ही गोपनीयता और निजता में सेंध की आशंका प्रबल हो जाती है। चित्रों और जानकारियों के बुरे तत्वों द्वारा दुरुपयोग की आशंका के साथ–साथ पहचान की चोरी, विवरण की चोरी, साइबर धोखा–धड़ी, हैकिंग और वायरस हमलों तथा आतंकवादी घटनाओं की आशकाएं बढ़ चली हैं। विध्वंसक तत्व उपयोगकर्ताओं की निजी जानकारियों द्वारा उनका मनोवैज्ञानिक आंकलन कर उन्हें गुमराह करने में सफल हो जाते हैं, जिससे न केवल जामिया मिलिया जैसी देश अहित की घटनाएं जन्म ले सकती हैं, बल्कि 'ब्लू व्हेल' जैसे खेलों द्वारा उपभोगकर्ता स्वयं को ही जोखिम में डालने और अपना जीवन समाप्त करने जैसी घटनाओं को अंजाम दे डालते हैं।

निस्संदेह सोशल मीडिया के साथ जुड़ आए इन ख़तरों को हम अनदेखा नहीं कर सकते है, किन्तु इस कारण हम सोशल मीडिया के अपार फायदों से भी स्वयं को वंचित नहीं कर सकते। इससे वंचित होने का अर्थ विकास के क्रम में पीछे लौटना होगा।

Scanned with CamScanner

हमें यह देखना होगा कि कोई भी तकनीकी विकास लाभ–हानि दोनों के लिए होता है। अब यह हम पर है कि हम उसका उपयोग किस रूप में करते हैं। सुरक्षा मानकों पर कार्य करना सरकार एवं सुरक्षा–एजेन्सियों का दायित्व है, किन्तु हम नागरिकों के भी अपने दायित्व हैं। हमें यह समझना होगा कि यह ज्ञान का भंडार है, जिसका उपयोग बुद्धिमत्ता से किया जाना चाहिए।

'अति सर्वत्र वर्जयेत्' का कथन तकनीकी के विषय में भी सत्य है। अतः सोशल मीडिया के इस्तेमाल हेतु समय तय कर इसका उपयोग सीमित किया जा सकता है। इससे आराम, सामाजिक मेल–मिलाप तथा अन्य सकारात्मक गतिविधियों के लिए समय निकालना संभव होगा।

इसी प्रकार, किसी भी विचार असहमत होने पर अपनी विरोध शालीन शब्दों में दर्ज़ किया जा सकता है। हमें याद रखना होगा कि अभिव्यक्ति की अपनी स्वतंत्रता का उपयोग करते समय दूसरों की निजता और स्वतंत्रता का सम्मान करना हमें सीखना होगा। यह उसके अपने और अपनों के हित में भी होगा जैसा कि हरबर्ट स्पेन्सर भी कहते हैं कि कोई व्यक्ति पूर्णतः स्वतंत्र नहीं हो सकता, जब तक सभी स्वतंत्र नहीं हो जाते। कोई व्यक्ति पूर्णतः सुखी नहीं हो सकता, जब तक सभी सुखी नहीं हो जाते।

संदर्भ

1- Media and culture : Rajesh Kumar, Sumit Enterprises, Delhi
2- Ethics in Media Communication : A Practical Guide for Students, Scholars and professionals, Sumit Enterprises, New Delhi
3- संचार माध्यमों का प्रभाव, ओमप्रकाश सिंह, क्लासिकल पब्लिशिंग कम्पनी, नई दिल्ली
4- आम आदमी और सूचना का माध्यम, डॉ. हनुमान, पत्रिका प्रकाशन, जयपुर
5- संचार माध्यम और सांस्कृतिक वर्चस्व, हरबर्ट आई. शीला ग्रंथशिल्पी, नई दिल्ली
6- आम आदमी की नई ताकत बना सोशल मीडिया, रवीन्द्र प्रभात, जनसंदेश टाइम्स
7- www.researchgate.netèpublicationè263325419
8- http:èèdx.doi.orgèdoi: 10.1509
9- http:èèpewinternet.orgèreportsè2011ètechnology-and-social-network.aspx
10- http:èèdev.twitter.comèdoesèapièstreaminh

• • •

Scanned with CamScanner